सांख्य दर्शन

डॉ. रश्मि पटेल

सांख्य शब्द का अर्थ –सम्यक ज्ञान या सम्यक ख्यान या विवेक ज्ञान।
-- गणना संख्या।

प्रणेता या पुनरुद्धारक- महर्षि कपिल।

गुरु शिष्य परंपरा-महर्षि कपिल(ग्रंथ-सांख्यप्रवचनसूत्र)-आसुरि- पंचशिख- ईश्वरकृष्ण(ग्रंथ-सांख्यकारिका)

सांख्य के भेद-

निरीश्वरवादी आस्तिक सांख्य- ईश्वरकृष्णीय सांख्य-25 तत्व(25वां तत्व-पुरुष)।
ईश्वरवादी आस्तिक सांख्य- भागवत पुराण का सांख्य-25 तत्व(25वां तत्व-काल)।

आस्तिक का अर्थ- वैदिक साहित्य या ईश्वर या दोनों को मानने वाला।
नास्तिक का अर्थ - वैदिक साहित्य और ईश्वर दोनों को न मानने वाला।

सांख्य के 2 मूल तत्व है पुरुष(चेतन) और प्रकृति (जड़)।

पुरुष

1. सांख्य का प्रथम तत्व चेतन (पुरुष) है ।
2. पुरुष करता नहीं केवल भोक्ता है।
3. पुरुष के सहयोग से ही प्रकृति जगत का निर्माण करती हैं।
4. पुरुष अनेक है।
5. पुरुष त्रिगुणातीत है। अर्थात सत,रज,तम् तीनों गुणों से परे है।
6. पुरुष का एकमात्र लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना है ।

जननमरणकरणां प्रतिनियमाद् युगपत्प्रवृत्तेश्च ।
पुरुषबहुत्वं सिद्धं त्रैगुण्यविपर्ययाच्चैव।।(कारिका ।8/सांख्यकारिका)

अनुवाद- ।. जन्म मरण इंद्रियां प्रति पुरुष भिन्न-भिन्न है।
2. सब पुरुष एक साथ कर्म नहीं करते।
3. भिन्न भिन्न पुरुषों में तीनों गुणों की मात्रा में भेद है।
अतः पुरुष अनेक है।

संघातपरार्थत्वात् त्रिगुणादिविपर्ययादधिष्ठानात् ।
पुरुषोअस्तिभोक्तृभावात् कैवल्यार्थंप्रवृत्तेश्च ।।(कारिका ।7/सांख्यकारिका)

अनुवाद-।. संघात दूसरों के लिए संघात नहीं ऐसे प्रत्येक संघात दूसरे का संघात माना जाए तो अन्वस्था दोष आ जाएगा।
इस संघात(प्रकृति-जड़) को किसी चेतन(पुरुष या आत्मा)की अपेक्षा है।
2.त्रिगुणात्मक प्रकृति भोग्य है भोक्ता पुरुष है जो कि स्वयं त्रिगुणातीत है।
3. जड़ प्रकृति का संचालन चेतन द्वारा होता है जैसी जड़(रथ)को चेतन(सारथी) चलाता है।
4.भोजन देखकर उसे खाने वाला सिद्ध होता ह उसी प्रकार भोग्य वस्तु भोक्ता (पुरुष) को सिद्ध करती है।
5 सभी पुरुष कैवल्य(मोक्ष)के लिए प्रयासरत हैं।

प्रकृति

1. सांख्य का द्वितीय तत्व अव्यक्त या प्रकृति है ।
2. यह जड़ तत्व है।
3. सृष्टि का मूलभूत कारण है।
4. कर्त्ता है।भोक्ता नहीं।
5. यह विश्व का मूल कारण है।
6. सत रज तम तीन गुणों की साम्यावस्था ही प्रकृति है।

- सत्- लघु, प्रकाशक, ज्ञान ,आनंददायक ,इसका प्रतीक श्वेत रंग है।
- रज्-दुखदाई, गतिशील ,क्रिया या कर्म का कारण, इसका प्रतीक लाल रंग है।
- तम्-भारी ,गुरु, अवरोधक, इसका प्रतीक काला रंग है।

----------------सत्कार्यवाद(कारणकार्यवाद)-------------

- ------परिणामवाद---------
  - प्रकृति परिणामवाद
    - सांख्य (महर्षि कपिल)
  - ब्रह्म परिणामवाद
    - विशिष्टाद्वैवाद (रामानुजाचार्य)
- ----------------------विवर्तवाद-----------------
  - ब्रह्म विवर्तवाद
    - अद्वैतवेदान्त (शंकराचार्य)
  - शून्यता विवर्तवाद
    - माध्यमिक सम्प्रदाय
  - विज्ञान विवर्तवाद
    - योगाचार सम्प्रदाय

विवर्तवाद

1. कार्य को कारण का प्रातीतिक या आभास(विवर्त) मात्र माना जाता है।
2. कार्य में कारण की यथार्थ सत्ता नहीं आती।
3. उदाहरण रज्जू में सर्प का आभास होना।
4. अर्थात जगत आभास मात्र है वास्तविक रूपांतरण नहीं।

परिणामवाद

1. कार्य, कारण का वास्तविक परिणाम है ।
2. कार्य में कारण की यथार्थ सकता है।
3. उदाहरण मिट्टी का घड़े में रूपांतरण ।
4. दूध का दही में रूपांतरण ।
5. अर्थात जगत वास्तविक रूपांतरण है।

प्रकृति परिणामवाद

1. कार्य अपने कार्योत्पत्ति के पूर्व अपने उपादान कारण विद्यमान रहता है।

2. अव्यक्त(प्रकृति)----------व्यक्त(सृष्टि)
(उपादान कारण) (कार्य)

3. अर्थात जगत् प्रकृति रूपी कारण का वास्तविक रूपांतरण है।
4. प्रकृति जगत का उपादान कारण है पुरुष नहीं।
5. परंतु पुरुष के अभाव में जगत का निर्माण संभव नहीं।
6. प्रकृति और पुरुष के सहयोग से ही जगत का निर्माण होता है।

प्रकृति की साम्यावस्था का भंग होना-

1. प्रकृति केवल उपादान(पदार्थ) कारण हैं, अर्थात स्वयं कुछ नहीं कर सकती ।
2. पुरुष के साथ संयोग होने पर साम्यावस्था भंग होती है ।
3. रजोगुण गतिशील होता है।
4. इस कारण सत् व तम् में भी स्पंदन आरंभ हो जाता है।
5. तमोगुण स्वभाव से अवरोधक है।
6. आरंभ में सतोगुण के प्रभाव से प्रकृति महात् में परिवर्तित होती है।
7. और इस तरह सृष्टि चक्र आरंभ हो जाता है।

सांख्य का विकासवाद

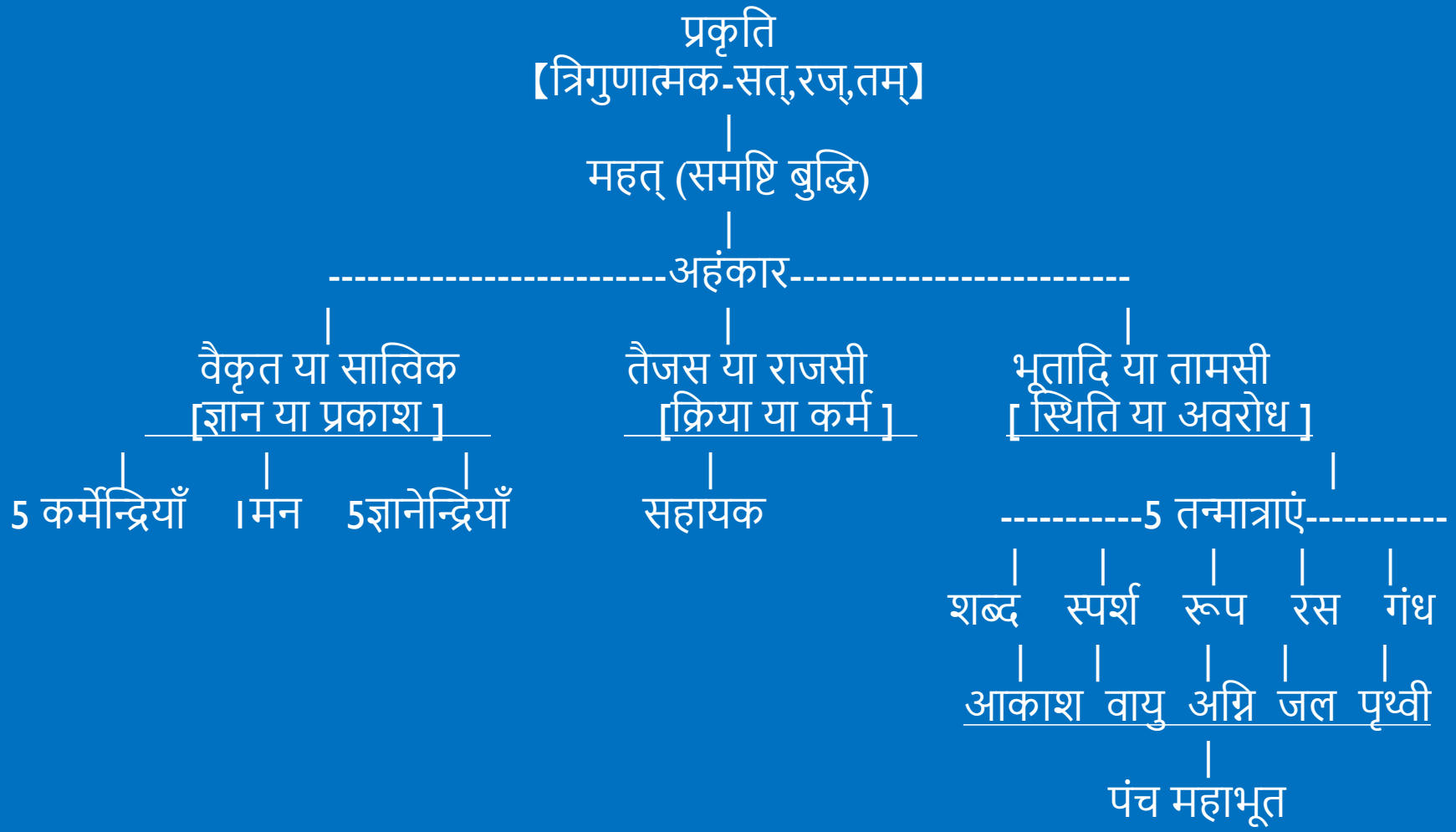
प्रकृति
【त्रिगुणात्मक-सत्,रज्,तम्】
महत् (समष्टि बुद्धि)
अहंकार
वैकृत या सात्विक
[ज्ञान या प्रकाश]
तैजस या राजसी
[क्रिया या कर्म]
भूतादि या तामसी
[स्थिति या अवरोध]
5 कर्मेन्द्रियाँ
।मन
5ज्ञानेन्द्रियाँ
सहायक
5 तन्मात्राएं
शब्द
स्पर्श
रूप
रस
गंध
आकाश
वायु
अग्नि
जल
पृथ्वी
पंच महाभूत

1. सृष्टि का कारण प्रकृति और पुरुष का सहयोग है।
2. संयोग का कारण अविद्या है।
3. मूल रूप में प्रकृति में सत रज तम तीनों गुण साम्यवस्था में रहते हैं।
4. मन, कर्म और ज्ञान दोनों में सहायक है।
5. सत की अधिकता से मूल प्रकृति महत् में परिवर्तित होती है।
6. प्रकृति जड़ और पुरुष चेतन है।

सांख्य के 25 तत्व-

पुरूष
प्रकृति
महत्
अहंकार
मन
5 कर्मेन्द्रियाँ-हस्त,पाद,उपस्थ, गुदा, वणी।
5 ज्ञानेन्द्रियाँ-चक्षु, घ्राण, रसन,त्वक,कर्ण।
5 तन्मात्राएं-रूप,गंध,रस, स्पर्श,शब्द।
5 महाभूत-अग्नि,पृथ्वी,जल,वायु,आकाश।

सांख्य ज्ञान मीमांसा

सांख्य में तीन प्रमाण माने गए हैं- प्रत्यक्ष अनुमान और शब्द(आगम)।

प्रत्यक्ष

विषयों के साथ साक्षात इंद्रिय सन्निकर्ष को प्रत्यक्ष कहते हैं।

प्रत्यक्ष दो प्रकार के होते हैं -**निर्विकल्प** और **सविकल्प**।

निर्विकल्प प्रत्यक्ष -गुण रहित वस्तु की सत्ता मात्र का आभास।

सविकल्प प्रत्यक्ष- गुण सहित वस्तु का संपूर्ण ज्ञान।

अनुमान

ज्ञात विषय के आधार पर अज्ञात विषय का ज्ञान।

उदाहरण जैसे धूम को देखकर अग्नि का ज्ञान होता है।

अनुमान दो प्रकार का होता है-**वीत** और **अवीत**।

वीत अनुमान-विधेयात्मक(सकारात्मक) अनुमान।

अवीत अनुमान-निषेधात्मक अनुमान।

शब्द या आगम

1. आप्त वचन को आगम प्रमाण कहा जाता है।
2. सत्य के ज्ञाता और वक्ता को आप्त कहा जाता है।
3. यह प्रत्यक्ष और अनुमान से भिन्न प्रमाण है।
4. इसका ज्ञान इंद्रियों से नहीं होता यह अतींद्रिय है ।
5. यह न्याय दर्शन शब्द प्रमाण के समान नहीं है।

संदर्भ सूची

1. हिंदी-सांख्यदर्शन(लेखक-पं. सीताराम शास्त्री)।
2. भारतीय दर्शन का परिचय(लेखक-डॉ. रामानंद तिवारी शास्त्री)।
1. भारतीय दर्शन-आलोचना और अनुशीलन(लेखक-चंद्रधर शर्मा)।